Review Of Research
Volume-2, Issue- 4 , Jan -2013
ISSN : 2249-894X Available online at www. lbp.world

भारतीय संगीत परंपरा एवं गीतप्रकारोंपर रिमिक्स व फ्यूजन के प्रभाव का विश्लेषनात्मक अध्ययन

डॉ. राजीव अं. बोरकर
सहायक प्राध्यापक , एम.ए. (संगीत), नेट, एम.फिल. एवं पी.एच.डी. ,
महाविद्यालय – मधुकरराव पवार कला महाविद्यालय, मुर्तिजापूर जि. अकोला.

सारांश :–

लोकसंगीत और शास्त्रीय संगीत इन दोनो से परे एक संगीत है, जिसका वर्ग विशेषता युवा और आधुनिक और अभिजात कहे जाने वाले, आधुनिकतम कल्पना से परे है, यह भी लोक प्रचलित होता है, इसके भी अपने स्वतंत्र नियम होते और वह संगीत विधा है 'रिमिक्स और फ्युजन'। यह स्थायी नहीं हो सकता। इसके कई रूप है – डिस्को, पॉप, रैप, जैज, रॉक आदि। ये अनगीनत रूप युवा वर्ग को आकर्षित कर रहे है। ऐसा नही है कि इन विविध स्वरूपों वाले संगीत का कोई सिध्दांत नहीं होता परन्तु आधुनिकता के चक्कर में इसका सिध्दांतहीन रूपांतरण अपनाया जा रहा है। आधुनिक एवं मॉडर्न बनने की चाह में दिशाहीन युवक इसके संमोहन से इस संगीत के आगोश में खोये जा रहा है । लोक एवं शास्त्रीयता से परे इस संगीत का कोई टिकाऊ रूप प्राप्त नही होता। नित नए परिवर्तनों के कारण, राजनितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना के उथल–पुथल के कारण हमारा सांगीतिक परिदृश्य भी बार–बार रूपान्तरित होता जा रहा है । ऑर्केस्ट्रेशन में नए वाद्ययंत्रों के आगमन से मेलोडी प्रधान संगीत अब मसालेदार हो गया है। सुना जाने वाला संगीत अब देखा जाने लगा है। टि.व्ही एवं व्हिडीयो ने बदलती मानसिकता वाले युवावर्ग को सम्मोहित करके रखा है।

प्रस्तावनाः–

संगीत यह एक वैश्विक भाषा है जो जाति–धर्म, गरीब–अमीर, छोटा–बड़ा इन सबसे परे है। यह एक ऐसी भाषा है जिसका प्रयोग आदि काल से होता आया है और अनन्त काल तक होता रहेगा । भारतीय संगीत की प्राचीन शैलीयॉ अब लुप्त होती दिखाई दे रही है। वर्तमान में साधारण लोगों का संगीत और विशिष्ट वर्ग का संगीत यह दो प्रकार निर्माण हुए है। प्रथम प्रकार में लोकसंगीत, भावसंगीत, तथा फिल्म संगीत और दुसरे प्रकार में शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत है। वैश्विक संगीत के दो मुख्य प्रवाह माने गए है, यथा भारतीय संगीत और पाश्चात्य संगीत। शास्त्रीय संगीत हमारी धरोहर है, हमारे संस्कृति का प्रतिबिंब है। हमारे लिए गर्व की बात है कि, विदेशों में शास्त्रीय संगीत के प्रति रूचि बढ़ती जा रही है। किंतु साथही हताश करने वाली बात यह है कि, भारतीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव भी तेजी से बढ़ रहा हैं। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति हावी होती जा रही है। हर क्षेत्र में पाश्चात्यों का अनुकरण किया जा रहा है। कला का क्षेत्र भी इससे अछुता न रहा यह अत्यंत दुख की बात है।

रीमिक्स क्या है – आज की परंपरा में तथा अंतरराष्ट्रीय परिवेश में रीमिक्स यह गायन का एक प्रकार है, जिसमें किसी गीत के मूलभूत आकार अथवा रूप को बदल कर गाया जाता है। इसमें आधुनिक वाद्ययंत्र तथा उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

रीमिक्स करने वाला संगीतकार या कलाकार किसी पुरानी रचना को कुछ बदलकर या उसमें कुछ जोडकर यांत्रिक उपकरणों की सहायता से उसमें नयापन लाने की कोशीश करता है, जिसे एडिटींग कहते है और श्रोताओं के सम्मुख पेश करता है। रीमिक्स आज एक अत्यंत लोकप्रिय संगीत का प्रकार बन गया है। इसका उपयोग, इसका विकास तथा इसका प्रचार तथा इसकी लोकप्रियता विज्ञान व्दारा प्राप्त संगीत के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा रेकॉर्डिंग के माध्यमों के अविष्कार के कारण बडी तेजी के साथ हुआ है।

आज भारतीय फिल्म संगीत की लोकप्रियता, मधुरता, कर्णप्रियता के साथ–साथ रीमिक्स और फ्युजन के स्वरूप भी प्रचार में आ गये है। क्षणिक आनंद प्राप्त होने के बाद मानव मन उन स्थाई तत्वों के लिए तड़पता है जिनसे भावनाओं को बल मिलता है, आत्मा को सुकुन मिलता हो और वह है हमारे फिल्म संगीत निर्देशकों के संगीत एवं गायक–गायिकाओं के कंठ से निकला मधुर संगीत हमें आज भी स्फूर्ती प्रदान करता है। पंकज मलिक, खेमचंद प्रकाश, नौशाद अली, सी.रामचंद्र, सचिन देव बर्मन, ओ.पी.नय्यर, सलिल चौधरी, लक्ष्मिकांत प्यारेलाल इन संगीतकारो व्दारा निर्मित संगीत एवं इनके संगीत निर्देशन में कुंदनलाल सहगल, सुरैय्या, गीतादत्त, म.रफी, लता मंगेशकर, आशा भोसले, मुकेश, किशोर कुमार, मन्ना डे इनके व्दारा गाये गये गीत आज भी अजर–अमर है। इससे यह स्पष्ट होता है कि, सिनमो खास और आम दोनो के नजदीक है। उसकी सरलता और सहजता के कारण सामान्यजन तक आसानी से पहुँचता है और प्रफुल्लित करने का सर्वोत्तम उपादान साबित होता है।

आज रिमिक्स युवाओं के बीच अति लोकप्रिय है। परन्तु इसके कारण एवं परिणाम क्या है इस सवाल का जवाब जानने के लिए हमें कुछ बातों पर ध्यान देना होगा। पहली बात तो जिन्हें यह रिमिक्स पसंद है उन्हे संगीत की आत्मा की पहचान नहीं है, वे तो धुनों और ऑर्केस्ट्रा के शोर–शराबे में नाचना और थिरकना पसंद करते है। इन गानों के व्हिडीओ में जो दृश्य आमतौर पर दिखाये जाते है वह उत्तेजित और अश्लिल होते है और उनका गाने से कोई सम्बन्ध नही होता। वे ज्यादातर युवा वर्ग को आकर्षित करने के लिए ही दिखाये जाते है। इस क्षेत्र में ऐसे गायक–गायीका आ रहे है जिन्हें संगीत की कोई शिक्षा नहीं मिली है और न ही उनकी आवाज में कोई कशिश है। इसलिए इस संगीत का जादू लंबे समय तक टिकने वाला नहीं।

फ्युजन और रिमिक्स यह नये संगीत प्रकार है। इसमें म्युझिक मिक्सिंग का कार्य किया जाता है। फ्युजन में जादातर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का उपयोग किया गया है। कुछ हद तक वह प्रशंसनीय भी रहा किंतु ज्यादातर फ्युजन 'कन्फ्युजन' में तबदील हो जाते है ऐसा अनुभव किया गया है। आज फ्युजन में पाश्चात्य और लोक संगीतों की छौंक और मसाले मिलाकर भारतीय शैली और भाषाओं के गानों को परोसा जा रहा है। और रिमिक्स में पुराने गानों को नए म्युझिक, नये रिदम, नयी प्रयोगशीलता और नयी आवाजों के साथ पेश किया जा रहा है। अर्थात पुराना रॅपर बदलकर नया रॅपर लगाकर अपनी वस्तु को बेचने का काम हो रहा है।

वर्तमान संगीत का घटता स्तर इस विषय में अगर संगीतकारों से पुछे तो उनका जवाब होता है कि, लोग जो पसंद करते है वही हम उन्हें देते है। इससे तो यह प्रतित होता है कि, आज के युवाओं को केवल शोरशराबा और मनःशांती भंग करनेवाला संगीत ही पसंद है। इसमें मतभेद अवश्य हो सकते है। किंतु जनरूचि को बदलने का काम हमारे संगीतज्ञ और गायकों के हाथ में है। हम अगर अच्छा संगीत प्रस्तुत करे तो जनसाधारण के आत्मा को जरूर झक झोर दे सकता है। आजकी फिल्मों में जिस प्रकार की धुने बनाई जा रही है इससे जनता की रूची निरंतर विकृत हो रही है। व्यक्तिगत संपत्ति के मोह ने संगीतकारों को इतना अधिक व्यावसायिक बना दिया है कि, वे जनरूची की तरफ ध्यान ही नहीं दे रहे। अभिजात और आधुनिक इसमें संघर्ष तो चलता ही रहेगा किंतु इस संघर्ष में भारतीय संगीत के मूल स्वरूप एवं परंपरा को

क्षति ना पहूँचे इस बात का ध्यान हमें रखना होगा। वरना इस रिमिक्स के भूत ने हमारी नई पिढी को इस तरह से जकड़ा है कि, खाते–पिते, सोते–जागते, उठते–बैठते रिमिक्स ही रिमिक्स सबके दिलों–दिमाग पर छाने लगा है। पुराने गीतों में छिपा सौंदर्य, उनकी मिठास, इन सभी पहलुओंपर हमे गौर करना चाहिए जिससे पुराने गीतों में निहीन आत्मा का हमें साक्षात्कार हो। जिन भावनाओं की अभिव्यक्ति मूल गीत व्दारा होती है, उन भावनाओं की रिमिक्स में एक अंश भी नहीं इस बात को हमें समझना पड़ेगा।

आज के इस जागतिकीकरण के दौर में संगीत के क्षेत्र में कई अविष्कार तथा नये प्रयोग हो रहे है। फ्युजन के माध्यम से पाश्चात्य संगीत एवं भारतीय संगीत का मेल यह वर्तमान संगीत में एक नया अविष्कार है। हमारे हिन्दुस्थानी संगीत के पं.रविशंकर, जाकीर हुसेन, शंकर महादेवन, पं. विश्वमोहन भट्ट आदि विख्यात कलाकारों नें भारतीय और पाश्चात्य संगीत का फ्युजन दुनिया भर में प्रस्तुत किया जिस कारण हमारा संगीत पुरी दुनीया में मशहूर हो गया किंतु दुख की बात यह है कि, हमारे देश में शास्त्रीय संगीत के प्रति हमारे युवाओं का रूझान कम हो रहा है और विदेशों में बडी संख्या में शास्त्रीय संगीत के प्रति आकर्षण बढा है ।

निष्कर्ष :–

1. एक ओर रिमिक्स खूब प्रचलित है तो दूसरी ओर इसके परिणाम सुखदायक नहीं है।
2. रिमिक्स के चहितों के अनुसार यह संगीत क्षेत्र को नया चेहरा प्रदान कर रहा है, किंतु उसका सृजन गंभीरतापूर्वक, पूरी सोच एवं कल्पना से होना चाहिए।
3. रिमिक्स संगीत का जादू लंबे समय तक टिकने वाला नहीं।
4. कुछ संगीतकार नये–नये प्रयोगोव्दारा भी भारतीय संगीत को क्षती ना पहुँचाते हुए भी सफल रूप से रिमिक्स का प्रयोग करते नजर आते है।
5. भारतीय संगीत पर आधारीत वाद्य, राग एवं शास्त्रीय गायकों व्दारा गाये जाने वाले संगीत का आधुनिक संगीतकारों व्दारा प्रयोग किया जाना चाहिए।

संदर्भ :

1. डॉ. कुमार ऋपितोष–संगीत शिक्षण के विविध आयाम, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली 02
2. डॉ. मुकेश गर्ग– शास्त्रीय संगीत और फिल्मी संगीत, संगीत पृ 113, संगीत कार्यालय हाथरस
3. हरिओम हरि – भारतीय संगीत पर वैश्विकरण का प्रभाव, शिल्पायन संगीत लेखमाला पृ 214,पिलिग्रीम्स पब्लिशींग, वाराणसी
4. ललित किषोर सिंह – ध्वनी और संगीत, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
5. डॉ.शुचिस्मिता–आकाशवाणी एवं हिन्दुस्थानी शास्त्रीय संगीत,कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली 02
6. स्वामी वाहिद काज़मी – वर्तमान में संगीत की विविधता, संगीत जून 2011 पृ39, संगीत कार्यालय, हाथरस
7. डॉ. मीता सक्सेना – संगीत में सृजन–शीलता की चुनौती एवं प्रयोग, संगीत मई 2011 पृ3, संगीत कार्यालय, हाथरस
8. डॉ. नमिता यादव –वैश्वीकरण व भारतीय संगीत, संगीत अक्तूबर 2009 पृ 11, संगीत कार्यालय, हाथरस